अन्यायी भण्डारी का दृष्टान्त

***भण्डारीपन के दृष्टान्त* (*भाग*-4)**

***रविवार का संदेश*, 26 *जुलाई*, 2026**

अन्यायी भण्डारी का दृष्टान्त

(या अन्य बाइबलों में इसे 'बेईमान प्रबंधक का दृष्टान्त' भी कहा गया है)

लूका 16:1-13

1 उसने अपने चेलों से भी कहा: "किसी धनवान का एक भण्डारी था; और लोगों ने उसके सामने उस पर यह दोष लगाया कि वह तेरी सम्पत्ति उड़ा रहा है।
2 तब उसने उसे बुलाकर उससे कहा, 'यह मैं तेरे विषय में क्या सुन रहा हूँ? अपने काम का लेखा दे, क्योंकि तू अब भण्डारी नहीं रह सकता।'
3 तब भण्डारी ने मन में कहा, 'मैं क्या करूँ? क्योंकि मेरा स्वामी भण्डारी का काम मुझसे छीन रहा है। मिट्टी खोदने का मुझमें बल नहीं; और भीख माँगने से मुझे लज्जा आती है।
4 मैं समझ गया कि मुझे क्या करना चाहिए, ताकि जब मैं भण्डारी के पद से हटाया जाऊँ, तो लोग मुझे अपने घरों में उतारें।'
5 इसलिए उसने अपने स्वामी के देनदारों में से हर एक को बुलाकर पहले से पूछा, 'तुझे मेरे स्वामी का कितना देना है?'
6 उसने कहा, 'सौ माप तेल।' उसने उससे कहा, 'अपना खाता ले, और जल्दी बैठकर पचास लिख दे।'
7 फिर उसने दूसरे से कहा, 'तुझे कितना देना है?' उसने कहा, 'सौ माप गेहूँ।' उसने उससे कहा, 'अपना खाता ले, और अस्सी लिख दे।'
8 स्वामी ने उस अन्यायी भण्डारी की सराहना की, क्योंकि उसने चतुराई से काम किया था। क्योंकि इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ व्यवहार करने में ज्योति की सन्तान से अधिक चतुर हैं।
9 और मैं तुमसे कहता हूँ, कि अधर्म के धन से अपने लिए मित्र बना लो; ताकि जब तुम असफल हो जाओ (या धन जाता रहे), तो वे तुम्हें अनन्त निवासों में ले लें।
10 जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है; और जो थोड़े से थोड़े में अन्यायी है, वह बहुत में भी अन्यायी है।
11 इसलिए जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा?
12 और यदि तुम पराए धन में सच्चे न ठहरे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?
13 कोई भी दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता: क्योंकि या तो वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन (मैमन) दोनों की सेवा नहीं कर सकते।"

उसने चतुराई से काम किया

पद 8 में जिस स्वामी का उल्लेख किया गया है, वह वह धनवान व्यक्ति है जिसने इस भण्डारी को अपने मामलों का प्रभारी बनाया था।

> **पद 8:** "स्वामी ने उस अन्यायी भण्डारी की सराहना की, क्योंकि उसने चतुराई से काम किया था...."

अन्यायी = नैतिक रूप से गलत।
प्रभु यीशु ने भण्डारी को 'अन्यायी भण्डारी' कहा, जो स्पष्ट रूप से हमें बताता है कि उसने जो किया वह गलत था।
चतुराई (Shrewdly) = बुद्धिमानी से, समझदारी से, विवेकपूर्ण होना, व्यावहारिक ज्ञान के साथ कार्य करना, दूरदर्शिता और रणनीतिक सोच दिखाना। कोई ऐसा व्यक्ति जो आगे की योजना बनाता है और समझदारी से काम लेता है। यह नैतिक अच्छाई के बजाय व्यावहारिक बुद्धिमत्ता को दर्शाता है।

शास्त्र में अन्य स्थानों पर भी इसी शब्द का सकारात्मक अर्थ में प्रयोग किया गया है:

मत्ती 7:24 - "बुद्धिमान मनुष्य जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।"
मत्ती 10:16 - "साँपों के समान बुद्धिमान और कबूतरों के समान भोले बनो।"
मत्ती 25:2-9 - बुद्धिमान कुंवारियां जिन्होंने अतिरिक्त तेल तैयार रखा था।

मालिक (इस दृष्टान्त में धनवान व्यक्ति) ने उसकी चतुराई (चतुर योजना) की प्रशंसा की, न कि उसकी बेईमानी की।

यीशु का मुख्य बिंदु

पद 8: "...क्योंकि इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ व्यवहार करने में ज्योति की सन्तान से अधिक चतुर हैं।"

संसार के लोग: दुनिया के वे लोग जिन्हें परमेश्वर की परवाह नहीं है और जो केवल सांसारिक उद्देश्यों के लिए जीते हैं। वे "अपनी पीढ़ी में चतुर हैं", जिसका अर्थ है कि वे अक्सर जानते हैं कि सांसारिक प्रणालियों का अपने

लाभ के लिए कैसे उपयोग किया जाए। वे सावधानीपूर्वक योजना बनाते हैं, समझदारी से निवेश करते हैं, सेवानिवृत्ति के लिए तैयारी करते हैं, संबंध बनाते हैं, अवसरों का लाभ उठाते हैं, और रणनीतिक रूप से सोचते हैं। **ज्योति की सन्तान:** विश्वासी, जो परमेश्वर को जानते हैं, जो आत्मा द्वारा ईश्वरीय रूप से सशक्त हैं, जिनके पास परमेश्वर का सत्य है - फिर भी वे पृथ्वी पर अपने जीवन में, सांसारिक संपत्ति के प्रबंधन में "अपनी पीढ़ी में चतुर" नहीं हैं और इसे अनंत भलाई के लिए उपयोग नहीं कर पाते हैं।

प्रभु यीशु इस बात की ओर इशारा कर रहे हैं कि इस दुनिया के लोग अपने मामलों को, विशेष रूप से सांसारिक संपत्ति और पैसे को, कितनी चतुराई से संभालते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि "ज्योति की संतान" (विश्वासी) ऐसा नहीं कर सकते। वास्तव में, "ज्योति की संतान" परमेश्वर द्वारा वचन और पवित्र आत्मा से सशक्त हैं, और इसलिए वे सांसारिक मामलों को बुद्धिमानी, ईमानदारी, ज्ञान और सत्यनिष्ठा के साथ संभालने में सक्षम हैं!

इस भण्डारीपन के दृष्टान्त का उद्देश्य

ज्योति की संतान (परमेश्वर के लोगों) को निर्देश देना कि राज्य (Kingdom) के दृष्टिकोण से सांसारिक संपत्ति/पैसे का उपयोग कैसे करें।

"...अधर्म का धन..." (पद 9,11,13)

पैसा लक्ष्य नहीं है। पैसा परमेश्वर के राज्य के लिए एक साधन (उपकरण) है, और हमें यह जानना चाहिए कि इसका सबसे अच्छा उपयोग कैसे किया जाए।

"मैमन" (Mammon) शब्द अरामी शब्द *māmônā'* से आया है जिसका अर्थ केवल धन, पैसा, संपत्ति और भौतिक संसाधन है। इसलिए "मैमन" का सीधा अर्थ सांसारिक धन है। इस संदर्भ में इस्तेमाल किया गया "मैमन" किसी दुष्ट आत्मा (demon) या देवता का नाम नहीं है।

हम जानते हैं कि पैसा अपने आप में तटस्थ (neutral) है। हालाँकि, यीशु इसे "अधर्मी" कहते हैं क्योंकि पैसा अनिवार्य रूप से इस गिरे हुए, पापी विश्व प्रणाली का प्रतिनिधित्व करने वाली एक "चीज़" है। और इस "पैसे" नामक चीज़ के कारण, बहुत से लोग अधर्म की ओर ले जाए जाते हैं - पैसे को मूर्ति बनाना, इसे और अधिक हासिल करने के लिए बुरे काम करना, आदि।

हम में से अधिकांश लोगों ने यह कथन सुना होगा: **"पैसा एक उत्कृष्ट सेवक है लेकिन एक भयानक स्वामी है।"**

इस दृष्टान्त में प्रभु यीशु हम "ज्योति की संतान" को निर्देश दे रहे हैं कि इस चीज़, इस "अधर्म के धन" को समझदारी से कैसे संभालें। वह हमें सिखा रहे हैं कि परमेश्वर के राज्य के अच्छे प्रबंधकों (भण्डारियों) के रूप में, अनन्त उद्देश्यों के लिए इसका उपयोग कैसे करें।

मित्रता बनाने के लिए पैसे का उपयोग करें

> **पद 9:** "और मैं तुमसे कहता हूँ, कि अधर्म के धन से अपने लिए मित्र बना लो; ताकि जब तुम असफल हो जाओ, तो वे तुम्हें अनन्त निवासों में ले लें।"

"....वे तुम्हें अनन्त निवासों में ले लें।"
इसे दो तरह से समझा जा सकता है:

1. **पहला (तात्कालिक संदर्भ में):** हम इसे मित्रता के संदर्भ में समझते हैं। सच्ची मित्रता "निरंतर निवास स्थान" या "अनन्त घरों" की तरह होती है। घर जैसी कोई जगह नहीं है। सच्ची मित्रता और वास्तविक रिश्ते जैसा कोई घर नहीं है। इसलिए, जब हम "असफल" होते हैं या कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो सच्चे दोस्त हमें अपने घरों में प्राप्त करेंगे।
2. **दूसरा (शास्त्र के अनुरूप):** इसे समझने का एक और तरीका यह है कि विश्वासियों के रूप में अन्य लोगों के प्रति हमारी उदारता यह सुनिश्चित करती है कि हम स्वर्ग में खजाना इकट्ठा करें। इसलिए, भले ही हम इस पृथ्वी पर "असफल" हो जाएं, हमने पहले से ही अनन्त खजाने जमा कर लिए हैं।

दिए गए संदर्भ को देखते हुए, दोस्ती को अनन्त घर मानने वाली पहली समझ ही यीशु के निर्देश को समझने का शाब्दिक और सही तरीका है। हम जानते हैं कि पैसा स्वर्ग में एक "अनन्त घर" या स्थान नहीं खरीद सकता - इसलिए यह विचार कि पैसा हमें स्वर्ग में जगह दिलाएगा, बाकी शास्त्रों के अनुरूप नहीं है।

छोटी-छोटी बातों में विश्वस्त और ईमानदार रहें

> **पद 10:** "जो थोड़े से थोड़े में सच्चा (विश्वस्त) है, वह बहुत में भी सच्चा है; और जो थोड़े से थोड़े में अन्यायी है, वह बहुत में भी अन्यायी है।"

तात्कालिक संदर्भ पैसे को संभालने का है। छोटी रकम संभालने में वफादार और ईमानदार रहें, और आपको बहुत अधिक सौंपा जा सकता है।

(उदाहरण: शुरुआती दिनों में APC - पैसा)

यह जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों पर भी लागू होता है। हर चीज में, थोड़े में वफादार रहें, और आपको बहुत अधिक सौंपा जा सकता है। छोटी शुरुआत के दिन को तुच्छ न समझें।

> **जकर्याह 4:10** - "छोटी बातों के दिन को किसने तुच्छ जाना है?..."

संदर्भ यह है कि यद्यपि जरुब्बाबेल छोटी शुरुआत कर रहा है, परमेश्वर जो सब कुछ देखता है ("सात आँखें"), वह मंदिर के पूरे भवन को देखता है और घोषणा करता है कि जरुब्बाबेल मंदिर के ऊपर अंतिम पत्थर (capstone) भी रखेगा।

पैसे के मामले में विश्वस्त रहें

> **पद 11:** "इसलिए जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा?"

पैसे को संभालने के तरीके में वफादार रहें। धन और पैसे के प्रबंधन और परमेश्वर के राज्य की चीजों को सौंपे जाने के बीच एक संबंध है - "सच्चा धन", जो परमेश्वर के उपहार, बुलाहट, अभिषेक, सेवकाई, आशीषों आदि का प्रतिनिधित्व कर सकता है।

यदि आप भौतिक धन और पैसे के अच्छे प्रबंधक हैं, तो आपको अनंत राज्य की जिम्मेदारियां और संसाधन सौंपे जा सकते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि पैसे के प्रति हमारी वफादारी हमारी आध्यात्मिक परिपक्वता को प्रकट करती है।

जो दूसरों का है, उसमें विश्वस्त रहें

> **पद 12:** "और यदि तुम पराए धन में सच्चे न ठहरे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?"

यह बेईमान भण्डारी अपने स्वामी की संपत्ति को बर्बाद और दुरुपयोग कर रहा था। इसके विपरीत, प्रभु यीशु हमें निर्देश दे रहे हैं कि जो किसी और का है उसमें ईमानदार और वफादार रहें - और तब हमें वह सौंपा जा सकता है जो हमारा अपना है।

यह विशेष रूप से हममें से उन लोगों के लिए बहुत मायने रखता है जो ऐसी कंपनियों/संगठनों में काम करते हैं या सेवा करते हैं जहां हम किसी ऐसी चीज के लिए जिम्मेदार हैं जो हमारी अपनी नहीं है। हम हमें सौंपे गए संसाधनों, जिम्मेदारियों और अवसरों को कितनी अच्छी तरह संभालते हैं?
(उदाहरण - APC शुरू करने से पहले अन्य चर्चों में सेवा करना)

परमेश्वर के प्रति विश्वस्त रहें - आप दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकते

> **पद 13:** "कोई भी दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता: क्योंकि या तो वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन (मैमन) दोनों की सेवा नहीं कर सकते।"

परमेश्वर के प्रति हमारी वफादारी असंदिग्ध होनी चाहिए - और हमें इसे व्यावहारिक तरीकों से जीना चाहिए। परमेश्वर और केवल परमेश्वर ही हमारा स्वामी है। पैसा हमारा सेवक है - एक उपकरण जिसका उपयोग हम भलाई के लिए करते हैं।

मत्ती 6:19-24

> 19 "अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहाँ कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर सेंध लगाते और चुराते हैं;
> 20 परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहाँ न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं।
> 21 क्योंकि जहाँ तुम्हारा धन है, वहाँ तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।
> 22 "शरीर का दीया आँख है। इसलिए यदि तेरी आँख निर्मल हो, तो तेरा सारा शरीर उजियाला होगा।
> 23 परन्तु यदि तेरी आँख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर अंधियारा होगा। इसलिए यदि वह उजियाला जो तुझ में है, अंधियारा हो, तो वह अंधियारा कितना बड़ा होगा!
> 24 "कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता: क्योंकि या तो वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।

यीशु हमें स्वर्ग में खजाना जमा करने का निर्देश देते हैं।
वह हमें सिखाते हैं कि जहाँ हम अपना खजाना रखते हैं, वह इस बात का संकेतक है कि हमारा दिल वास्तव में कहाँ है।
और फिर वह हमारी "आँख" के बारे में बात करते हैं - हमारी दृष्टि, हम क्या देखते हैं, हमारा ध्यान (फोकस)।

यदि हमारी आँख निर्मल है - हम अच्छी चीजें देखते हैं, उन पर ध्यान केंद्रित करते हैं, उनकी कल्पना करते हैं - यह हमारे अस्तित्व को प्रकाश से भर देता है, और हम बिना ठोकर खाए प्रकाश में चल सकते हैं।
यदि हमारी आँख बुरी है - हम बुरी चीजों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, हम बुराई देखते हैं, या हमारे पास कोई दृष्टि नहीं है - यह हमें अंधेरे में चलने के लिए छोड़ देता है।

इसलिए, हम जिस पर "ध्यान केंद्रित करते हैं", जिस पर अपनी नजरें टिकाते हैं, वह निर्धारित करता है कि हम प्रकाश में चलते हैं या अंधेरे में। और यहाँ फिर से, प्रभु यीशु इस बात पर जोर देते हैं कि हम परमेश्वर और पैसे दोनों की सेवा नहीं कर सकते।

इसलिए, पैसे को संभालते समय हमें अपने **हृदय** और अपनी **दृष्टि** की रक्षा करने की आवश्यकता है। हमारा हृदय और दृष्टि (फोकस) परमेश्वर पर होना चाहिए। यह सुनिश्चित करेगा कि हम परमेश्वर की सेवा करें और पैसे पर शासन करें।

1 तीमुथियुस 6:6-10, 17-19

> 6 परन्तु सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है।
> 7 क्योंकि हम जगत में कुछ नहीं लाए, और यह स्पष्ट है कि हम उसमें से कुछ ले भी नहीं जा सकते।
> 8 और यदि हमारे पास खाने और पहनने को है, तो हम उन्हीं पर सन्तोष करेंगे।
> 9 परन्तु जो धनी होना चाहते हैं, वे परीक्षा, और फंदे, और बहुत-सी व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को विनाश और सत्यानाश में डुबा देती हैं।
> 10 क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने की लालसा में कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी कर लिया है।
> 17 इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे कि वे अभिमान न करें, और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु जीवते परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से देता है।
> 18 वे भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें, और उदार और बाँटने में तत्पर हों,
> 19 और आने वाले समय के लिए अपने वास्ते एक अच्छी नींव डालें, ताकि वे अनन्त जीवन को पकड़ लें।

जब परमेश्वर हमें आशीष देता है तो हम दयालु और उदार होकर प्रतिक्रिया करते हैं।

फिलिप्पियों 4:17-19

> 17 यह नहीं कि मैं दान चाहता हूँ, परन्तु मैं ऐसा फल चाहता हूँ जो तुम्हारे खाते में बढ़ता जाए।

> 18 मेरे पास सब कुछ है और बहुतायत से है। मैं इपफ्रुदीतुस के हाथ से तुम्हारी भेजी हुई वस्तुएँ पाकर तृप्त हो गया हूँ, जो एक मधुर सुगन्ध, और परमेश्वर को ग्रहण योग्य और भाता हुआ बलिदान है।
> 19 और मेरा परमेश्वर अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।

ये दोनों अंश हम पर यह प्रकट करते हैं कि पृथ्वी पर हमारी उदारता ऐसे फल उत्पन्न करती है जो अनन्त हैं।

भण्डारीपन के राज्य के नियम (Kingdom Laws of Stewardship)

नियम 1: जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत माँगा जाएगा (लूका 12:48)
नियम 2: जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा, और उसके पास बहुत हो जाएगा; परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। (मत्ती 25:29)
नियम 3: इस प्रकार जो पिछले हैं वे पहले होंगे, और जो पहले हैं वे पिछले होंगे। क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े। (मत्ती 20:16)
नियम 4: सांसारिक मामलों और सांसारिक संसाधनों, विशेष रूप से पैसे में एक बुद्धिमान प्रबंधक (भण्डारी) बनें। परमेश्वर के प्रति वफादार रहकर, लोगों को आशीष देकर, छोटी-छोटी चीजों में ईमानदार और वफादार रहकर, दूसरों की चीजों को अच्छी तरह से संभालकर पैसे के प्रबंधन में ईमानदार और वफादार बनें, और अनन्त चीजों को संभालते समय प्रबंधन के इसी स्तर का उपयोग करें (लूका 16:9-13)।